International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666; Vol.3, Issue-10(7), October, 2016
Impact Factor: 4.535; Email: drtvramana@yahoo.co.in

# कर्ण के चरित्र में भारतीय संस्कृति

डॉ.आर.रमेश नायक
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
सेन्ट अन्स डिग्री कालेज फार उमेन्स
हलसूरु, बेंगलूरु–560008

## भूमिका

भारतीय संस्कृति संसार की सर्व श्रेष्ट संस्कृति है । इनमें स्वार्थ की अपेक्षा परार्थ एवं परमार्थ को अधिक महत्व दिया जाता है । सहन, परोपकार, धर्म प्रियता, सत्यप्रियता, समताभावना आदि इस संस्कृति के अत्यन्त शालीन तत्व है । इन तत्वों की विवृत्ति कर्ण के चरित्र के माध्यम से हुई है । कर्ण भारतीय संस्कृति का आधार स्तंभ है । कर्ण के चरित्र में भारतीय संस्कृति के विभिन्न तत्वों रूपी सुन्दर फूलों की सुगंध सर्वत्र दिखाई देती है ।

## अप्रतिम त्यागी

भारतीय संस्कृति के महान आदर्शों के प्रतिष्टापना के लिए मानों कर्ण का जन्म हुआ है । भीष्म के समान वे जीवन में कोई अधर्म कार्य नहीं करता । उसकी अखंड मैत्री भावना, धर्मप्रियता, मित्र दुर्योधन के लिए किये जानेवाले अप्रतिम त्याग, पुण्यपथ का अनुगमन, परोपकार चेतना, दानशीलता आदि भारतीय संस्कृति के तत्व कर्ण के चरित्र रूपी उद्यान में सुमनों की तरह संव्याप्त है ।

सांस्कृतिक तत्व साहित्य की आत्मा है । सांस्कृतिक तत्व से रहित साहित्य निष्प्राण कलेवर हो जाता है । संस्कृति के तत्वों से अनुप्राणित कविता सर्वश्रेष्ट बनती है । सांस्कृतिक चेतना से समंचित रामायण, महाभारत काव्य संसार के सर्वश्रेष्ठ काव्य बने हैं । यह सांस्कृतिक चेतना सन्देश तत्व एवं चरित्र चित्रण द्वारा व्यक्त होती है । जिस चरित्र में सांस्कृतिक तत्व रूपी सुगंध होती है, वो चरित्र चन्दन तरू बन जाता है ।

महाभारत के कर्ण चरित्र में इस तत्व की पराकाष्ठ दृग्गोचर होती है । कर्ण के चरित्र में सत्य, धर्म, उपरीग्रह, निष्ट, श्रद्ध, धानगुण, परोपकार, भावना, संयम, निस्वार्थ सेवाभावना, अकुंटित मैत्रीभावना, वाक्पालन आदि सांस्कृतिक चेतना तत्वों का अभूतपूर्व अनुष्टान हुआ है । संस्कृति के साकार अवतार बनकर भिष्म, विदुर और कर्ण महाभारत के सर्वश्रेष्ट पात्र कहलाते हैं । उपर्युक्त महान गुण जन्म–जन्म के पुण्यों के परिणाम हैं ।

## कर्ण चरित्र की विशेषताएँ

कर्ण महाभारत के पात्रों में अत्यंत विशिष्ट है, क्योंकि उसके जीवन के किसी प्रसंग में ईष्या, द्वेष, असूया आदि विष बन्दुओं के लिए अणुमात्र स्थान भी नहीं है । सत्य, धर्म, संयम, सहजता, वीरता, त्याग, दानगुण, पौरुष, परोपकार भावना आदि न भूतो न भविष्यत तति अद्भुत गुणों का साक्षात्कार इस महान चरित्र में होता है । कर्ण कभी अपने जीवन में पाप भावना के लिए अवकाश नहीं देता । कर्ण के चरित्र की यह विशेषता है कि सूर्य की शक्ति से उत्पन्न होकर जीवन भर सूर्य की तरह चमककर अंत तक सूर्य का प्रताप दिखाता है । समूचे संसार के इतिहास में कर्ण जैसा दानवीर कोई नहीं है । कर्ण जैसा विश्वसनीय मित्र संसार के इतिहास में दुसरा कोई नहीं मिलता । प्रस्तुत अध्याय के विभिन्न परिच्छेदों में कर्ण के अद्भुत चरित्र की विभिन्न विशेषताओं की महत्ता का निरूपण किया जा रहा है ।

महाभारत के पात्रों में कर्ण का चरित्र अत्यंत विशिष्ट है । जन्म, बाल्य, विद्याभ्यास, मृत्यु आदि सभी प्रसंगों में कर्ण का चरित्र सर्वश्रेष्ट है । महाभारत में ही नहीं, संसार के किसी ग्रंथ में अथवा इतिहास के किसी काल खंड में ऐसा चरित्र नहीं मिलता, जिसकी तुलना हम कर्ण के चरित्र के साथ कर सकें । इस पात्र के जीवन के प्रत्येक प्रसंग में एक विस्मयकारी विषिष्टता दृग्गोचर होती है । इसी विशिष्टता ने अनुसंधित्सु को प्रस्तुत शोधकार्य के लिए आकर्षित किया है । जन्म से लेकर मृत्यु तक भयंकर संकटों के कंटकों के बीच में बढ़ते हुए कर्ण चरित्र रुपी पुष्प को हम कभी भूल नहीं सकते ।

कर्ण ऐसा दुरदृष्ट मानव है जिसका जन्म उसकी माता की कन्यत्व की दशा में होता है, वह कही भी अपने पिता का नाम नहीं ले सकता । ऐसा दौर्भाग्य किसी को नहीं मिलना चाहिए । यह उसके जन्म की विशिष्टता है ।

**सूर्य के वरदान से कर्ण का जन्म**

उसके लालन पालन का वृत्तांत और भी विशिष्ट है । माता की गोद में एक दिन के लिए भी वह नहीं रहा । सूर्य के वरदान से उसका जन्म तो हुआ । कन्या कुन्ती उसे अपने पास रख नहीं पाती । कुन्ती संसार को क्या यह बतायेगी कि यह लड़का कैसे पैदा हुआ । उसके सिर पर लोक लाज का भारी बोझ है । एक मंजूषिका में पत्तों के बीच नवजात शिशु को रखकर वह गंगा की लहरों में छोड़ देती है । गंगा मैया की कृपा पर उसे पूर्ण विश्वास है । वह सोचती है कि कोई दयालु इस मंजुषिका को देख लेगा और शिशु का लालन पालन करेगा । नवजात शिशु कर्ण की दशा अतीव करुना पूर्ण है । पैदा होते ही माता के द्वारा वह लहरों में छोड़ दिया जाता है । गंगा की लहरें उसे किनारे तक ले चलती है । संसार के इतिहास में केवल कर्ण ही ऐसा दुरदृष्ट प्राणी है, जो पैदा होते ही अपनी माता के द्वारा नदी में छोड़ दिया जाता है । ऐसे दुरदृष्ट शिशु की कल्पना भी नहीं की जा सकती है । यह कर्ण के चरित्र की दूसरी विशिष्टता है ।

**कर्ण को गंगा की लहरों का संगीत सुनने का सौभाग्य**

पैदा होते ही गंगा की लहरों का संगीत सुनने का सौभाग्य कर्ण को छोड़कर और किसी को नहीं मिला । यह उसकी तीसरी विशिष्टता है । कर्ण जिस पेटिका में मुस्कुरा रहा है, वह पेटिका किनारे पहुँचती है । वह रथ चालक अधिरथ को मिलती है । निस्संतान अधिरथ उस शिशु को पाल लेता है । अधिरथ और उसकी पत्नी राधा दोनों कर्ण कुण्डल और कवच से युक्त उस शिशु को अपनी गोद में ही नहीं, अपने सिर पर ही नहीं बल्कि अपनी आँखों और मन में बिठा लेते हैं । यह कर्ण जीवन की चौथी विशिष्टता है कि कुन्ती

भोज की पालित पुत्री और भगवान सूर्य के पुत्र कर्ण का शैशव और समूचा जीवन निम्न जाति के रथ सारथी के घर में बिताता है ।

निम्न जातीय व्यक्ति के रुप में कर्ण पलता है । यह कर्ण चरित्र की पाँचवी विशिष्टता है । कोई नहीं जानता कि कर्ण भगवान रामचन्द्र के वंश पुरुष भगवान सूर्य का पुत्र है । कर्ण का सारा जीवन अधिरथ पुत्र के रुप में बीतता है । अधिरथ की पत्नी राधा के पुत्र होने के कारण वह राधेय कहलाता है । कानों में कुण्डल होने से लोग उसे कर्ण कहकर पुकारते हैं । वह दलित वंश का प्रति निधि बनकर जीता है । यही उसकी सच्ची जाति है । जहाँ हम पलते हैं, वह जाति ही हमारि जाति है ।

**जाति संबंधी विचार**

कर्ण चरित्र की यह विशिष्टता है कि पहले से अपनी जाति से पृथक होने के कारण वह जाति के संबंध में कुछ नहीं जानता । स्वकर्म और स्वाध्याय के कारण उसमें आत्माभिमान का आधिक्य है । जाति, जातीयता आदि में उसे बिलकुल विश्वास नहीं है । अनुभव के बल पर अच्छी तरह जान गया है कि धर्म ही जाति है और भुजबल ही जाती है। जाति के संबंध में उसकी विचार धार अत्यंत वैज्ञानिक है । जाति संबंधी धारणा कर्ण के चरित्र की एक उल्लेखनीय विशेषता है ।

**कर्ण के चरित्र में कर्मण्यता**

कर्मण्यता कर्ण–चरित्र की एक अत्यंत प्रमुख विशिष्टता है । शैशवावस्था से लेकर मृत्यु पर्यन्त कर्ण सदा किसी–न–किसी प्रमुख कर्म में निरत रहता है । जीवन के क्षण क्षण क्प कर्ण कर्म रुपी इन्द्र धनुषी रंग से रंग देता है । सदा कर्म निरत रहनेवाले कर्ण का जीवन गांधी के जीवन के समान है । कर्मण्यता कर्ण जीवन रूपी उद्यान का सुन्दार सुमन है ।

**स्वाध्याय तथा नित्य अभ्यास**

सदा अपने कर्म एवं साधना का अभ्यास करना कर्ण के चरित्र की एक महान विशेषता है । घर घर के बाहर, वन, उपवन, विद्या प्रदर्शन शाला–सर्वत्र कर्ण स्त्य का अभ्यास करता है ।

धर्म का गुण सीखता है । दिनरात धनुर्विधि का अभ्यास करता है । विद्याभ्यास में सदा तल्लीन रहनेवाले कर्ण जैसे व्यक्ति बहुत काम मिलते हैं । सदा कार्य में तल्लीन रहना कर्ण के चारू चरित्र की एक अत्यंत उज्ज्वल विशेषता है ।

**निष्कर्ष :**

भारतीय संस्कृति महान है । यह धरती देवताओं की है । इस देश के मिट्ठी के हर एक कण कण में संस्कृति का अंश दृग्गोचर होती है । हिन्दुस्थान की रीति, रिवाज, आचार विचार, संस्कृति–सभ्यता अत्यंत महान है । लेकिन वर्तमान में मनुष्य–मनुष्य के संबंध टुटताजा रहा है । मनुष्य में राग, द्वेष, कपट, वचन एवं स्वार्थीपन दिखाई दे रहा है । यह कोई बुरा अंश कर्ण के चरित्र में प्रकाशित नहीं होती है । उनके चरित्र में भारतीय संस्कृति के अतिथियों का सम्मान, निश्वार्थ, सत्य, धर्म, सभ्यता, मानवीयता, उदारता, देशभक्ति, गुरुभक्ति, मातृ–पुत्र भक्ति, क्षमता, समता, ममता आदि लक्षण आलोकित होता है ।

# ग्रंथसूची

## हिन्दी काव्य

1. रश्मिरथी _ रामधारी सिंह दिनकर
2. प्रियप्रवास – हरिऔध
3. धर्म भिक्षा – डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति
4. कुरुक्षेत्र – रामधारी सिंह दिनकर

## कन्नड काव्य

1. पंप भारत – महाकवि पंप
2. कर्नाटक भारत कथा मंजरी – कुमारव्यास